प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 14.10.67

ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप समझाते हैं। बच्चे समझते हैं उंच ते उंच भगवान कहा जाता है। आत्मा का बुद्धियोग घर तरफ जाना चाहिए ;परंतु ऐसा एक भी मनुष्य दुनियाभर में नहीं है ,जिसको यह बुद्धि में आता हो। सन्यासी लोग भी ब्रह्म को घर नहीं समझते। वह तो कहते हैं ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। तो घर थोड़े ही हुआ। घर में ठहरना होता है। तुम बच्चों की बुद्धि वहां रहनी चाहिए। जैसे कोई फांसी पर चढ़ता है ना। तुम अब रुहानी फांसी पर चढ़े हुए हो। अंदर में यह है उंच ते उंच बाप आकर हमको उंच ते उंच घर ले जाते हैं। अब हमको घर जाना है। उंच ते उंच बाप फिर उंच ते उंच पद भी प्राप्त कराते हैं। रावण के राज्य में सभी नीच हैं। वह उंच, यह नीच। उन्हों को उंच का पता नहीं है। उंच को भी नीच का पता नहीं है। अब तुम समझते हो उंच ते उंच भगवान बाप को ही कहा जाता है। बुद्धि उपर में चली जाती है। वह है ही परमधाम में रहने वाला। यह कोई भी नहीं समझते हम आत्मा भी उपर में रहने वाली हैं। यहां आते हैं सिर्फ पार्ट बजाने। यह कोई के खयाल में नहीं रहता। अपने ही धंधे–धोरी आदि में लगे रहते हैं। अब बाप समझाते हैं उंच ते उंच तब बनेंगे जब याद की यात्रा में तुम मस्त रहेंगे। याद से उंच पद पाना है। नालेज जो तुमको सिखाई जाती है वह भूलने का नहीं है। छोटे बच्चे भी वर्णन कर लेंगे। बाकी योग की बात को बच्चे नहीं समझेंगे। बहुत बच्चे हैं जो याद की यात्रा को पूरी रीति समझते नहीं हैं। हम कितना उंच ते उंच जाते हैं मूलवतन, सूक्ष्मवतन और यह है सूिलवतन। 5तत्व यहां है। मूलवतन ,सूक्ष्मवतन में यह नहीं होते। यह नालेज बाप ही देते हैं। इसलिए इनको नालेजफुल ,ज्ञान का सागर कहा जाता है। मनुष्य फिर समझते हैं बहुत शास्त्र आदि पढ़ना ही ज्ञान है। शास्त्रों का कितना घमंड रहता है। कितना पैसा कमाते हैं। शास्त्र पढ़ने वालों को बहुत मान होता है ;परंतु अब तुम समझते हो उसमें उंचाई तो कुछ है नहीं। उंच ते उंच है ही भगवान। उन द्वारा हम उंच ते उंच स्वर्ग में राज्य करने वाले बनते हैं। स्वर्ग क्या है,नर्क क्या है, 84 का चक्र कैसे फिरता है सिवाय तुम्हारे इस सृष्टि भर में कोई नहीं जानते। कह देते हैं यह भी कल्पना है। ऐसे लिए फिर समझना है हमारे कुल का न है। मूंझ न होना चाहिए। समझा जाता है उनका पार्ट ही नहीं है तो कुछ भी समझ न सकेंगे। अब तुम बच्चों का सर बहुत उंच है। जब तुम उंच दुनियां में होंगे तो नीच दुनियां को नहीं जानेंगे। नीच दुनियां वाले फिर उंच दुनियां को नहीं जानते। उनको कहा जाता है स्वर्ग। विलायत वाले(क्रिश्चियन लोग) भल स्वर्ग में जाते नहीं हैं। फिर भी नाम लेते हैं हैविन पैराडाइज था। मुसलमान लोग भी बहिश्त कहते हैं ;परंतु यह उनको पता नहीं है वहां कैसे जाना होता है। अभी तुमको कितनी समझ मिलती है। उंच ते उंच बाप कितनी नालेज देते हैं। यह ड्रामा कैसा वंडरफुल बना हुआ है। जो ड्रामा के राज को नहीं जानते तो कल्पन कह देते। सन्यासी लोग भी कहते हैं सब कल्पना है। मनुष्य जो चाहे सो बनाय सकते हैं। बायस्कोप आदि बनाते हैं, यह भी कल्पन है। खयालात से बनाते हैं ना। कोई काम की चीज तो नहीं है। तुम बच्चे जानते हो यह है ही पतित दुनियां। इसलिए चिल्लाते हैं हे पतित–पावन आकर हमको पावन बनाओ। बाप कहते हैं हर 5000वर्ष बाद हिस्ट्री रिपीट होनी है। पुरानी दुनियां सो फिर नई बननी है। इसलिए मुझे भी आना पड़ता है। बाप आय तुम बच्चों को उंच बनाते हैं। पावन को उंच ,पतित को नीच कहा जाता है। यही दुनियां पावन थी। अब पतित आसुरी हैं। यह बातें भी तुम्हारे में नम्बरवार हैं जिनकी बुद्धि में आती है। सदैव खुशी में नहीं रहते। कोई ने कुछ कहा, कोई नुकसान हुआ तो रंज हो जाते हैं। बाप कहते है। अब इस नीच दुनियां का अंत आना है। यह है पुरानी दुनियां। मनुष्य कितना नीच बन जाते हैं ;पंरतु यह समझते थोड़े ही हैं कि हम नीच हैं। भक्त लोग हमेशा नीच नमाते ही रहते हैं। नीच के आगे नीच नमाना थोड़े ही होता है। पोजिशन वाले के आगे नीच नमाना होता है। सतयुग में कब ऐसे नहीं कहत। भक्त लोग ही कहते हैं। विद्वान आदि कब नहीं

कहेंगे। बाप तो कब ऐसे नहीं कहते नीच नमाय चलो। नहीं। यह तो पढ़ाई है। गॉडली यूनिवर्सिटी में तुम पढ़ रहे हो। कितना नशा रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि सिर्फ यूनिवर्सिटी में नशा रहे। घर में उतर जाये। घर में भी नशा रहना चाहिए। यहां तो तुम जानते हो हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं। यह तो कहते हैं मैं थोड़े ही ज्ञान का सागर हूं। यह भी ज्ञान नदी है। सागर से नदियां निकलती हैं ना। सागर तो एक है। ब्रह्पुत्रा नदी सबसे बड़ी है। बहुत बड़ा स्टीमर आते हैं। नदियां तो बाहर में भी बहुत हैं। पतित–पावन गंगा सिर्फ यहां ही कहते हैं। बाहर में कोई नदी को ऐसे नहीं कहते। पतित–पावन नदी हो तो फिर गुरू की दरकार ही नहीं। नदियों में, तालाबों आदि में कितना भटकते हैं। कहां2 तो तालाब ऐसे गंदे होत हैं बात मत पूछो। वह मिट्टी उठाय रगड़ते रहते हैं। अब बुद्धि में आया है यह सब दुर्गति के रास्ते हैं। वह लोग कितना प्रेम से जाते हैं। अब तुम समझते हो इस ज्ञान से हमारी आंखें खुल गई हैं। तुम्हारी ज्ञान की तीसरा नेत्र खुली है। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। इसलिए त्रिकालदर्शी कहते हैं। तीनों कालों का ज्ञान आत्मा में है। आत्मा तो बिंदी है। उसमें नेत्र कैसे होगा?यह सब समझाने की बातें हैं। ज्ञान के तीसरे नेत्र से तुम त्रिलोकीनाथ बनते हो। नास्तिक से आस्तिक बन जाते हो। आगे बाप को और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते थे। अभी बाप द्वारा रचना को जानने से तुमको वर्सा मिल रहा है। यह नालेज है ना। हिस्ट्री–जॉग्राफी है। हिसाब–किताब .....है। अच्छा तीखा बच्चा हो तो (बैठ) हिसाब करे, हम कितने जन्म लेते हैं। इस हिसाब से और धर्म वालों के कितने जन्म होंगे ;परंतु बाप कहते हैं इन बातों (में) जास्ती माथा मारने की दरकार नहीं। टाइम वेस्ट हो जाता है। यहां तो सब भूलना है। यह सुनाने की दरकार नहीं। तुम तो रचता बाप की पहचान देते हो, जिसको कोई नहीं जानते। शिवबाबा भारत में ही आते हैं। जरूर कुछ करके जाते हैं तब तो जयंती मनाते हैं ना। गांधी अथवा कोई साधु आदि होकर गए हैं उन्हों की स्टैम्प्स बनाते हैं। फेमिली प्लान का भी स्टैम्प बनाया है। अभी तुमको तो नशा है हम पांडव गवर्मेंट हैं। आलमाइटी बाबा के गवर्मेंट हैं। तुम्हारा कोर्ट ऑफ आर्म्स भी है। और कोई इस कोर्ट ऑफ आर्म्स को जानते नहीं। बाबा राय देते रहते हैं। अपना अखबार निकालो। उसमें कोर्ट ऑफ आर्म्स भी दो और समझाते रहो विनाश काले प्रीत बुद्धि हमारी है। बाप को हम बहुत याद करते हैं। बाबा को याद करते2 प्रेम में आंसू भी आ जाते हैं। बाबा आप हमको आधा कल्प लिए सभ दुःखों से दूर कर लेते हो। और कोई भी गुरू अथवा मित्र–सम्बंधी आदि किसको भी याद करने की दरकार नहीं है। एक बाप को ही याद करो। सवेरे अमृतवेले का टाइम बहुत अच्छा है। बाबा आपकी तो बहुत कमाल है। आप हर 5000वर्ष बाद आकर हमको जगाते हो। मनुष्य कुम्भकर्ण की आसुरी नींद में सोये हुए हैं अर्थात् अज्ञान नींद में हैं। भक्ति को अज्ञान नींद कहा जाता है। जब तक बाप का ज्ञान नहीं है तब तक भक्ति को ही मानते हैं। कितना हठयोग आदि सिखलाते हैं। विलायत से भी खास आकर हठयोग सीखते हैं। तुम क्या करते हो और वह महर्षि आदि बैठ क्या कराते हैं। कितना फर्क है। अब तुम समझते हो भारत का प्राचीन योग तो यह है। बाकी जो भी इतने योग आदि सिखलाते हैं वह सब है नानसेंस। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि है। पारस बुद्धि होते ही हैं नई दुनियां में ;परंतु एक भी मनुष्यमात्र अपन को पत्थरबुद्धि समझते नहीं हैं। जब पारस बुद्धि का ज्ञान हो तब समझें। बाप कहते हैं कितने मूर्ख बन गए हो। इसलिए भारत की यह हालत हुई है। अब तुम पुजारी से पूज्य बनते हो। तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान है। खुशी रहती है। यहां आते हो, समझते हो बाबा रिफ्रेश करते हैं। कोई तो रिफ्रेश हो बाहर निकलते और वह नशा खलास हो जाता। नम्बरवार तो हैं ना। बाप समझाते हैं यह है ही पतित दुनियां। बुलाते भी हैं पतित–पावन आओ ;परंतु अपन को पतित समझते थोड़े ही हैं। साधु लोग गंगा स्नान आदि करने जाते हैं उसको समझाते हैं पतित–पावनी है। इसलिए पाप धोने जाते हैं। अरे, शरीर को थोड़े ही पाप लगता है। बाप तो आय आत्मा को पावन

बनाते हैं और कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। यह ज्ञान अभी तुमको मिला है। वह अपन को पतित थोड़े ही समझते हैं। अपनी पूजा कराते रहते हैं। जैसे देवताओं की होती है। तुम माताओं को तो नशा होना चाहिए यह तो दुश्मन ठहरे, जो हमारी हमजिन्स हो विधवा बनाय देते हैं और बच्चों को निधण का कर देते हैं। अपने सुख के लिए कितने को दुःख देते हैं ;परंतु वह समझते थोड़े ही हैं। स्वर्ग में ऐसी बातें होती नहीं। यह है ही रौरव नर्क। समी बिच्छु–टिंडन मिसल मारते–काटते रहते हैं। पराई स्त्रियों को चुराय लेते हैं। बहुत गंद है। भारत में तो और ही रौरव नर्क है। भारत एकदम स्वर्ग था। थोड़ा भी कुछ होता है तो ....कहेंगे ना रौरव नर्क है। जैसे बाबा कहते हैं तुम थोड़ा समय इस नर्क में हो। बाकी तुम तो हो संगम पर ;परंतु कोई विकार में गिरते हैं, फेल होते हैं तो जैसे कि नर्क में जाय पड़ते हैं। 5फ्लोर से गिर पड़ते। फिर सौगुणा सजा खानी पड़ती है। तो बाप समझाते हैं भारत कितना उंच था। अब कितना नीच हालत में है। तुम विश्व के मालिक थे। अभी तो अजामिल जैसे पापी हो पड़े हो। शास्त्रों में क्या2 बातें बैठ लिखी है। फिर पादरी लोग बैठ कहते हैं तुम्हारा शंकर–पार्वती पर फिदा हुआ। फिर बिच्छु–टिंडन पैदा हुए। भगवान–भगवती ऐसे काम करते थे?ऐसी2 बातें सुनाय वह फिर अपने धर्म ले आते हैं। कितनी ग्लानी की बातें शास्त्रों में लिख दी हैं। बाप बैठ समझाते हैं यह लोग अपन को ईश्वर कहलाते हैं और मुझे कह देते हैं पत्थर–ठिक्कर में है और अपन को पुजवाते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है ;परंतु समझाना तो पड़ता है ना। क्या2 बातें सुनाते हैं। कच्छ–मच्छ अवतार, सुअर अवतार भी कह देते हैं। अब सुअर तो है सबसे गंदा जनावर ;क्योंकि वह विष्टा खाते हैं। उनको भी भगवान का अवतार कह देते हैं। अभी तुम कितना समझदार बनते हो। मनुष्य कितना बेसमझ है। तुमको यहां नशा चढ़ता है। फिर बाहर निकलने से नशा कम हो जाता है। खुशी उड़ जाती है। स्टुडेंट बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो कब नशा कम होता है?पढ़कर पास होते हैं फिर क्या बनते हैं?तो अब दुनियां का हाल देखो क्या है। तुमको उंच ते उंच बाप खुद आकर पढ़ाते हैं। सो भी निराकार। तुम आत्माएं भी निराकार हो। यहां पार्ट बजाने आये हो। यह ड्रामा का राज बाप ही बैठकर समझाते हैं। इस सृष्टि के चक्र को ड्रामा भी कहा जाता है। उस नाटक में कोई बीमार पड़े तो निकल जावे। यह है बेहद का नाटक। यथार्थ रीति तुम बच्चों की बुद्धि में है। तुम जानते हो हम यहां पार्ट बजाने आते हैं। हम बेहद के एक्टर्स हैं। यहां शरीर लेकर पार्ट बजाते हैं। बाबा आया हुआ है। यह सब बुद्धि में रहना चाहिए। बेहद का ड्रामा कितना बुद्धि में रहना चाहिए। बेहद विश्व की बादशाही मिलती है तो इसके लिए पुरुषार्थ भी ऐसा अच्छा करना चाहिए ना। गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो ;परंतु पवित्र बनो। विलायत में ऐसे बहुत हैं। जब बूढ़े होते हैं तो कम्पेनियनशिप के लिए शादी करते हैं। सम्भालने के लिए। फिर विल कर देते हैं। कुछ उनको ,कुछ चैरिटी में। विकार की बात नहीं रहती। आशुक–माशुक भी विकार लिए फिदा नहीं होते हैं। जिस्म का सिर्फ प्यार। तुम हो रुहानी आशुक। एक माशुक को (याद) करते हो। सभी आशुकों का एक माशुक है। सभी एक ही को याद करते हैं। वह कितना शोभनीक है। आत्मा गोरी है ना। वह है एवर गोरा। तुम जो सांवरा बन गए हो, तुमको सांवरा से गोरा बनाते हैं। तुम जानते हो बाप हमको गोरा बनाते हैं। यहां बहुत हैं पता नहीं किस2 खयालात में बैठे रहते हैं। स्कूल में भी ऐसे होता है। बैठे2 बुद्धि कहां बायस्कोप तरफ ,दोस्तों आदि तरफ चली जाती है। सतसंग में भी ऐसा होता है। यहां भी ऐसे हैं। बुद्धि में नहीं बैठता तो नशा नहीं चढ़ता। धारणा नहीं होती है जो फिर औरों को भी करावें। बहुत बच्चियां आती हैं जिनकी दिल होती है कि सर्विस पर लग जावें ;परंतु बच्चे हैं तो बाबा कहते हैं बच्चे को सम्भालने कोई माई को रख दो। यह तो बहुतों को कल्याण करेंगी। होशियार हो तो क्यों न रुहानी सर्विस में लग जाये। बच्चे को सम्भालने कोई को रख दो। इन माताओं की तो अब बारी है ना। पुरुष देखेंगे हमारी स्त्री ने तो सन्यासियों को भी जीत लिया है। लौकिक, पारलौकिक नाम बाला कर दिखावेंगे। अच्छा ,गुडमार्निंग।